अक्रम यूथ

जुलाई 2021 हिन्दी दादा भगवान परिवार

माता-पिता के पॉज़िटिव

जनरेशन गैप
भाग- 2

अनुक्रमणिका

04 माता-पिता के पॉज़िटिव

05 धीरज

07 ज्ञानी की वैज्ञानिक दृष्टि

09 धन्य है ऐसे सभ्य विचारों वाली प्रजा को!

10 माता-पिता झूठ बोलते हैं।

12 आज का जनरेशन, ज्ञानी की दृष्टि से

14 सफलता की चाबी

16 Q and A

18 एक्टिविटी

19 माता-पिता के लिए पत्र

20 अनुभव

21 जोक्स

23 #कविता

जुलाई **2021**

वर्ष : 9, अंक : 3

अखंड क्रमांक : 99

संपर्क सूत्र :

ज्ञानी की छाया में,

त्रिमंदिर संकुल, सीमंधर सिटी,

अहमदाबाद-कलोल हाइवे,

मु.पो. - अडालज,

जिला : गांधीनगर-382421, गुजरात

फोन : (079) 39830100

email: akramyouth@dadabhagwan.org

website: youth.dadabhagwan.org

store.dadabhagwan.org

संपादक : डिम्पल मेहता

Printer & Published by
Dimplebhai Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421.
Taluka & Dist - Gandhinagar

Owned by : Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421.
Taluka & Dist - Gandhinagar

Published at : Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421.
Taluka & Dist - Gndhinagar

Printed at : Amba Multiprint
B-99, GIDC, Sector-25,
Gandhinagar – 382025. Gujarat.
Total 24 Pages with Cover page

Subscription

Yearly Subscription
India :200 Rupees
USA: 15 Dollars
UK: 12 Pounds
5 Years Subscription
India : 800 Rupees
USA: 60 Dollars
UK: 50 Pounds

In India, D.D. / M.O. should be drawn in favour of "Mahavideh Foundation" payable at Ahmedabad.

© 2021, Dada Bhagwan Foundation.
All Rights Reserved

संपादकीय

प्रिय मित्रों,

अक्रम यूथ के 'जनरेशन गैप' नामक अंक को पढ़कर आप सभी ने अपने पेरेन्ट्स के साथ संबंधों को ज्यादा मज़बूत बनाने की शुरुआत तो कर ही दी होगी। पेरेन्ट्स और बच्चों के रिलेशनशिप को ज्यादा रसीला बनाने के प्रयास को इस अंक में हम और आगे बढ़ाएँगे।

छोटी-छोटी बातों में हम अपने मम्मी-पापा पर गुस्सा हो जाते हैं। हमारे दैनिक जीवन में मम्मी-पापा का कितना बड़ा योगदान है इस ओर हमने कभी ध्यान ही नहीं दिया। हम स्वादिष्ट भोजन कर सकें इसलिए मम्मी दिन में तीन बार भोजन बनाती हैं। पापा हमारी सारी सुविधाओं का ध्यान रखते हैं। बीमारी के समय निरंतर हाज़िर रहते हैं।

उनके इन पॉज़िटिव हिस्से की ओर हमने शायद कभी ध्यान ही नहीं दिया। यह तो एक बात हुई, लेकिन ऐसे तो कई पॉज़िटिव गुण होंगे जिस ओर हमारा ध्यान ही नहीं गया। सही बात है न? क्योंकि जाने-अनजाने हम तो उनके नेगेटिव गुण देखने में ही लगे रहते हैं। परिणाम स्वरूप एकता टूटती है, दूरियाँ बढ़ती हैं और जनरेशन गैप बढ़ता ही रहता है।

लेकिन, अब तो हम सभी ने यह द्रढ़ निश्चय किया है कि इस गैप को दूर करके ही रहेंगे। चलिए, देखें कि मम्मी-पापा के पॉज़िटिव देखने से क्या फायदा होता है और सही समझ द्वारा पॉज़िटिव देखना शुरू करके हमारे जीवन से जनरेशन गैप रूपी इस दुषण को बाय-बाय करें।

- डिम्पल भाई मेहता

माता-पिता के पॉज़िटिव

क्या आपने कभी महसूस किया है कि आज की युवा जनरेशन और हमारे बुज़ुर्गों की जनरेशन के बीच का गैप बढ़ता जा रहा है? क्या आप छोटी-छोटी बातों में अपने मम्मी-पापा पर गुस्सा हो जाते हैं? अगर हाँ, तो आपके ध्यान में ज़रूर आया होगा कि आपके गुस्से होने पर या **अनुचित व्यवहार करने पर भी आपसे नाराज़ होने की बजाय वे आपको मनाते हैं, आपको लाड़-प्यार करते हैं।**

हाँ, हम सभी जानते हैं कि अपने बच्चों को खुश रखने के लिए मम्मी-पापा बहुत मेहनत करते हैं और उनसे हो सके उतना बेस्ट देने का प्रयत्न भी करते हैं। हमें उनके पॉज़िटिव गुण देखने चाहिए लेकिन फिर भी जाने-अनजाने में नेगेटिव ही ज्यादा देखे होंगे, है ना? तो चलो, अब हम उनके पॉज़िटिव गुण देखने का यथार्थ प्रयत्न करें।

क्या आप जानना चाहते हैं कि मम्मी-पापा के पॉज़िटिव देखने के क्या फायदे है?

धीरज

एक नवदंपति के यहाँ बच्चा आने से घर का माहौल खुशियों से भर गया था। माता रसीला बहन और पिता काव्यभाई के घर एक सुंदर पुत्र का जन्म हुआ, जिसका नाम 'लक्ष' रखा गया। उनकी खुशी का ठिकाना ही नहीं रहा। लक्ष को हर तरह की खुशियाँ मिले, इसका उसके माता-पिता बहुत ध्यान रखते थे।

लक्ष बहुत ही चंचल और उत्साही स्वभाव वाला बालक था। उसकी मम्मी उसे लोरी सुनाकर सुलाती और जब तक वह सो न जाए तब तक वहीं बैठी रहतीं। सारी चीज़ें विस्तार से जानने के लिए वह हमेशा उत्सुक रहता था। यह तब की बात है जब लक्ष ने थोड़ा बोलना शुरू किया था। एक दिन वह अपनी मम्मी के साथ बैठा था। उसने एक कौआ देखा तो मम्मी से पूछा, "यह कौन सा पक्षी है?" उसकी मम्मी ने कहा, 'बेटा, इसे कौआ कहते हैं।' और फिर उसकी मम्मी अपना काम करने लगीं। थोड़ी देर बाद लक्ष ने वापस पूछा, "यह कौन सा पक्षी है?" उसकी मम्मी ने बहुत ही धीरज से जवाब दिया, "बेटा, इसे कौआ कहते हैं।" जब तक कौआ वहाँ बैठा रहा तब तक लक्ष अपनी मम्मी से पूछता रहा और उसकी मम्मी ने हर बार उतने ही धीरज से जवाब दिया, "हाँ बेटा, इसे कौआ कहते हैं।"

इतना ही नहीं, जैसे-जैसे लक्ष बड़ा होता जा रहा था वैसे-वैसे वह और ज्यादा चंचल होता जा रहा था। ना ही सोने में ठीक से ध्यान देता और ना ही खाने में। वह कोई भी काम सही वक्त पर नहीं करता था। खाने के वक्त खेलना, खेलने के वक्त सोना और सोने के वक्त उसे भूख लगती थी। इस तरह वह सब चीज़ों के समय बदल देता लेकिन माता रसीला बहन घर के कई काम होने के बावजूद भी प्यार से उसके साथ तोतली भाषा में बातें करके बातों-बातों में उसे खाना खिलाती।

इस तरह रसीला बहन घर के सारे काम छोड़कर पहले लक्ष के काम को करतीं थीं। फिर चाहे सुबह जल्दी उठकर उसे तैयार करके स्कूल भेजना हो या स्कूल से आने के बाद होमवर्क करवाना, खाना खिलाना और समय पर सूला देना हो। वे लक्ष के सभी काम बहुत प्यार से, धीरज रखकर शांति से करती थीं।

कभी लक्ष बच्चों के साथ झगड़ा करके आता, कभी किसी को छेड़कर भाग जाता, कभी स्कूल में कुछ गलत करके आता तब रसीला बहन लक्ष पर गुस्सा भी हो जाती थीं। गुस्सा करने के बाद बहुत प्यार से लक्ष को समझाती, लक्ष को कभी अच्छा लगता तो कभी वह रूठ भी जाता था। फिर भी रसीला बहन प्यार और धीरज के साथ इस बात का निरंतर ध्यान रखती थी कि लक्ष को जीवन में कोई तकलीफ ना हो।

इस तरह प्यार और धीरज से काम लेते-लेते

‘मम्मी, आपको दिखाई नहीं दे रहा, मैं अभी टी.वी. देख रहा हूँ जब भी मैं टी.वी. देख रहा होता हूँ तभी आपको काम होता है। आप रोज़ ऐसा ही करती हैं, मुझे टी.वी. नहीं देखने देना चाहती इसलिए मुझे काम बताती रहती हैं। और अगर मैं काम करने से मना कर दूँ तो कहती हैं कि मैं काम में मदद नहीं करता।’

अब लक्ष 18 साल का हो चूका था। रोज़ाना की तरह उस दिन भी लक्ष टी.वी पर अपना मनपसंद शो देख रहा था। तभी उसकी मम्मी ने पास वाली दुकान से कुछ सामान लाने के लिए कहा। उसका मनपसंद टी.वी. शो चल रहा था इसलिए लक्ष ने मम्मी की बात को इग्नोर कर दिया। कुछ देर बाद फिर से उसकी मम्मी ने कहा कि, ‘बेटा, खाना बनाने में देर हो रही है, जल्दी से ला दे न।’ यह सुनकर लक्ष गुस्से से बोला, ‘मम्मी, आपको दिखाई नहीं दे रहा, मैं अभी टी.वी. देख रहा हूँ? जब भी मैं टी.वी. देख रहा होता हूँ तभी आपको काम होता है। आप रोज़ ऐसा ही करती हैं, मुझे टी.वी. नहीं देखने देना चाहती इसलिए मुझे काम बताती रहती हैं। और अगर मैं काम करने से मना कर दूँ तो कहती हैं कि मैं काम में मदद नहीं करता।’ गुस्से में इतना कहकर लक्ष जल्दी से गया और सारा सामान लाकर पटक दिया और फिर अपने रूम में चला गया।

लक्ष की दादी बहुत देर से ये सब देख रही थीं। दादी माँ भी लक्ष के पीछे-पीछे उसके रूम में गईं और उसे गुस्से में देखकर उसके पास बैठ गईं। और प्यार से उसके सिर पर हाथ फेरते हुए कहा, ‘बेटा लक्ष, क्या इस तरह मम्मी पर गुस्सा करना चाहिए? थोड़ी धीरज रखकर यही बात तू मम्मी को शांति से भी कह सकता है न! चल, तुझे बताती हूँ कि अपने दादाश्री का इस बारे में क्या कहना है...’

ज्ञानी की वैज्ञानिक दृष्टि से

प्रश्नकर्ता : मेरा प्रश्न है कि हमारे मम्मी-पापा का देखें तो उन लोगों में बहुत ज्यादा धीरज होती है। और यूथ का देखें तो उनमें बहुत कम धीरज होती है। तो इसका क्या कारण है? मम्मी-पापा में ऐसा क्या है कि वे इतना ज्यादा धीरज रख पाते हैं?

पूज्यश्री : कैसा होता है कि उम्र बढ़ने के साथ समझ भी बढ़ती है और आजकल की यंग जनरेश में बुद्धि ज्यादा है। बुद्धि के कारण इमोशनल, इमोशनल, इमोशनल, ऐसा करना है और वैसा करना है, जल्दी करो, फटाफट... और पेरेन्ट्स के पास अनुभव है कि भाई, जल्दी करने से काम नहीं होता है। हम इस राह पर चलेंगे, धीरे-धीरे पहुँच जाएँगे। वे समझदार और हृदय वाले हैं इसलिए धीरज से काम कर सकते हैं और वे खुद अनुभवी हैं।

वास्तव में तो बुजुर्गों के अनुभव का आपको लाभ उठना चाहिए। काम जल्दी करना है, लेकिन उनके अधीन रहकर, उनके गाइडन्स के अनुसार करो कि 'आप क्या कहना चाहते हैं? क्या कर सकते हैं?' वे आपको सावधान करेंगे कि देखो, इस काम में तुम्हें इतने प्रॉब्लमस् आएँगे। तो नेगेटिव देखने के बजाय उनका सुनो तो सही! बुजुर्ग अनुभवी, समझदार एवं हृदय वाले होने के कारण धीरज रखकर काम कर सकते हैं। पर यूथ अपनी बुद्धि की वजह से थोड़े इमोशनल हो जाते हैं और हाइपर, 'मुझे पता है, मैं क्यों नहीं कर सकता, आप सब पुरानी पीढ़ी के लोग! हम सब यंग, पावरफुल!' इस तरह के अहंकार के कारण बुजुर्गों का रिस्पेक्ट नहीं करते, जिससे बाद में फिर सब काम बिगड़ जाते हैं। अतः वास्तव में तो उनके पास अनुभव है और यूथ के पास शक्ति है। उनका अनुभव और यूथ की शक्ति, दोनों मिलकर अच्छा रिज़ल्ट ला सकते हैं। समझ में आया न?

अब तक जो हो गया सो हो गया लेकिन अब बुजुर्गों के विनय में रहो, उनके अनुभव का लाभ लो और आपको ज़िंदगी में जब कोई बड़े निर्णय लेना पड़े तब उनकी गाइडन्स लेकर धीरे-धीरे आगे बढ़ो। ठीक है!

माता-पिता में अनेक पॉज़िटिव गुण हैं, उनके जनरेशन में ऐसी कौन सी विशेषताएँ थीं जो हमारे जनरेशन में बहुत कम देखी जाती हैं। चलिए, देखें...

धन्य है ऐसे सभ्य विचारों वाली प्रजा को!

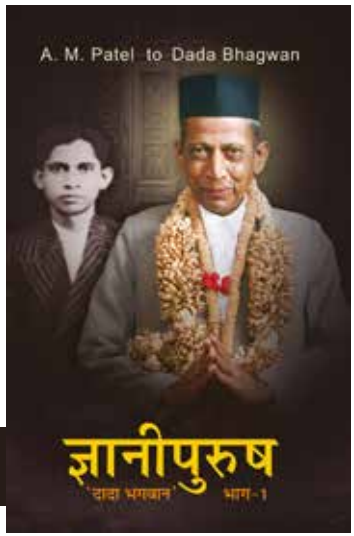

दादाश्री की पुस्तक की झलक

अब, उन दिनों कलियुग वाली दृष्टि खराब नहीं थी। खराब विचार नहीं थे किसी भी प्रकार के, कितना सुदंर! विषय से संबंधित विचार ही नहीं किसी प्रकार का, भोले थे बिचारे, भद्र लोग! उस समय मैंने ऐसा कभी नहीं सुना कि भादरण गाँव की किसी लड़की के सामने किसी ने खराब दृष्टि डाली हो तो धन्य है न, उस प्रजा को!

प्रश्नकर्ता : दादा, हमारे छः गाँवों में शुरू से ही रिवाज है कि सब एक बाप की प्रजा हैं?

दादाश्री : हाँ, एक बाप की प्रजा।

प्रश्नकर्ता : अपने गाँव में ऐसा था इसलिए जो कुछ भी खानदानियत रह गई है, वह उसी वजह से है। छः गाँव में ऐसा जो बचा है, उसका कारण वही है।

दादाश्री : बिल्कुल भी, कोई किसी भी लड़की का नाम नहीं लेता था।

प्रश्नकर्ता : क्योंकि शुरू से ही ऐसा रिवाज था कि हमें अपने गाँव में शादी नहीं करनी है क्योंकि एक ही बाप की प्रजा हैं इसलिए गाँव की लड़कियों पर दृष्टि नहीं बिगाड़नी चाहिए।

दादाश्री : शादी करने की तो बात ही कहाँ, सोच भी नहीं सकते थे, दृष्टि ही नहीं डालते थे। सिर्फ बहन ही।

प्रश्नकर्ता : बहन ही, वही विचार थे न, इतना पक्का विचार इसलिए उसका कोई असर ही नहीं होता था न!

दादाश्री : तो फिर नंगे घूमते थे, उसका गुणा और इन्हें बहन की तरह देखते थे, उसका गुणा करें तो यह कैसा कहलाएगा? नंगे घूमते थे उस हिसाब से रस्टिक कहलाते थे, लेकिन बहन की तरह माना, वह?

प्रश्नकर्ता : हाँ, तो इसका बहुत बड़ा जमा हो गया न, दादा।

दादाश्री : मिलान तो करना पड़ता है न! वर्ना फिर कैसा लगेगा?

प्रश्नकर्ता : उस समय वाली समझ शक्ति का आधार था।

माता-पिता

झूठ बोलते हैं

जय सच्चिदानंद मित्रों,

शीर्षक पढ़कर आपको आश्चर्य हुआ होगा! है न? एक दंपति के जीवन में बच्चे के आने के बाद सारी ज़िंदगी के लिए खुद के 'माई टाइम' को भूलकर बच्चे का महत्व खुद से भी ज्यादा हो जाता है। सच कहूँ तो मेरे मम्मी-पापा सचमुच बहुत झूठ बोलते हैं।

वे झूठ बोलते हैं, मुझसे कहते हैं, "तू नए कपड़े ले ले, हमें तो अब नए कपड़े पहनने का शौक ही नहीं रहा।"

मैं अच्छी तरह से पढ़ाई कर सकूँ इसलिए खुद बस में ऑफिस जाते हैं और मेरी पढ़ाई के लिए महँगी किट ले आते हैं और मुझे पता भी नहीं लगने देते।

घर में खाने की कोई चीज़ लाए हों तो मैं और मेरी बहन लड़ते हैं कि, "इसे ज्यादा दिया, उसे ज्यादा दिया" इसलिए फिर मम्मी अपने हिस्से का हमें दे देती है और जब हम पूछते हैं कि, "आपको नहीं खाना?" तब कहती हैं, "नहीं, नहीं, मुझे भूख नहीं है, तुम लोग खा लो।"

मेरे पापा झूठ बोलते हैं, हमारे साथ खेलते वक्त काम की थकान अपनी हँसी और उल्लास में छिपाकर खेलते हैं।

हाँ, वे झूठ तो बोलते हैं इसलिए क्योंकि हमसे प्यार करते हैं...

Love You Mom Dad

आज की जनरेशन ज्ञानी की दृष्टि से

प्रश्नकर्ता : आजकल परिवार में घर्षण बढ़ रहे हैं और सब जगह एडजस्टमेन्ट लेना पड़ता है, तो ये सब क्या है? शिक्षण या ज्यादा परिपक्वता? छोटी उम्र में ही परिपक्व हो जाना, क्या यह समस्या है?

नीरू माँ : एक तो यह जनरेशन **'हाइपर जनरेशन'** है। पहले के ज़माने की जनरेशन बहुत लो थी, आजकल की जनरेशन बहुत हाइपर हो गई है। रेवॉल्यूशन बहुत तेज़ी से घूमते हैं, पहले बहुत कम थे। जीवन में जो कुछ भी हुआ हो या माँ-बाप ने जो बताया हो उसके विरुद्ध कोई आर्ग्युमेन्ट या प्रश्न खड़ा ही नहीं होता था और उसे स्वीकार कर लेते थे। आजकल तो दो-तीन साल के छोटे बच्चों को भी कुछ कहें तो उसके बारे में दस सवाल पूछते हैं, "क्यों? ऐसा क्यों करना चाहिए? वैसा क्यों करना चाहिए?"

पहले के जमाने में ऐसा था कि हमें यदि कहा जाता, "दो घंटे के लिए एक कोने में बैठ जाओ" तो "बैठने के लिए क्यों कह रहे हैं?" ऐसा भी नहीं पूछते थे और बैठ जाते थे। आजकल तो बच्चे दो मिनट के लिए भी नहीं बैठ सकते। इतने अधिक हाइपर हो गए हैं! इतना हाइपर होने की वजह से चित्त, मन, सब चंचल हो गए हैं, विचलित हो गए है। स्थिरता ही नहीं है। पहले हम तो कई घंटो तक स्थिरता से एक ही जगह पर बैठ सकते थे, आजकल के बच्चे नहीं बैठ पाते हैं।

प्रश्नकर्ता : नीरू माँ, पहले तो घर में एक बुर्जुग रहते थे, सिन्यिर, उनका कहा सभी के लिए अंतिम ऑर्डर होता था।

नीरू माँ : इसका कारण है, कोई बुद्धि नहीं लगाता था क्योंकि बुद्धि खड़ी ही नहीं होती थी और आजकल तो दस सवाल खड़े होते हैं। छोटे बच्चों को भी अपने बुजुर्गों के लिए सवाल खड़े होते हैं। "दादाजी ऐसा क्यों करवाते हैं? दादाजी ऐसा करते हैं, वैसा करते हैं, दादाजी झूठे हैं।" ऐसी बुद्धि हमें खड़ी ही नहीं होती थी। हम क्या कहना चाहते हैं, हमारा पोइन्ट ऑफ व्यू आपकी समझ में आ रहा है न?

प्रश्नकर्ता : हाँ, समझ में आ रहा है।

नीरू माँ : हमारा व्यू पोइन्ट यह है कि **इस जनरेशन में बुद्धि बहुत तेज़ हो गई है, तीक्ष्ण हो गई है।** शिक्षा के कारण कह लो या वैश्वीकरण कह लो या फास्ट कम्प्यूटर के कारण। कम्प्यूटर का ज़माना आ गया है, इन्टरनेट, टी.वी. और अन्य भी कई मीडिया। विश्व का वैश्वीकरण हो गया है और जीवन बहुत तेज़ रफ्तार वाला हो गया है और सभी को खुद के लिऐ टेन्शन, टेन्शन, टेन्शन। छोटे-छोटे बच्चे भी कहते हैं, "मैं बहुत टेन्शन में हूँ।" अभी इसने कहा न, तीन-चार साल का था तभी से वह कहता है कि, "मुझे बहुत क्रोध आता है।" क्रोध क्या है वह हमारे ज़माने में पता भी नहीं था, किस पर क्रोध करना वह भी पता नहीं था, सबकुछ बहुत सरल था। और अब तो स्कूल, पढ़ाई, सब बहुत टेन्शन भरा हो गया है। घर चलाने में पत्नी को टेन्शन, पति जहाँ कमाने जाता है उसे वहाँ टेन्शन, जहाँ देखें वहाँ टेन्शन इसलिए मन स्थिर नहीं रहता, चंचल रहता है। किसी भी चीज़ को आसानी से नहीं ले पाते और जो स्थिरता थी, समझदारी थी वह सब छिछली हो गई है, डेप्थवाली नहीं रही। शिक्षा मिली है लेकिन उनका गढ़न नहीं हो पाया है। ये वन-ट्रैक हो गए हैं, वन-ट्रैक। अपनी ही दिशा में, एक ही ट्रैक में उनकी दृष्टि खुली है, बाकी की सारी दिशाएँ बंद हैं। ऑल राउन्ड नहीं हैं। ऑल राउन्ड रहता तो इन सारी समस्याओं का हल निकाल पाना आसान हो जाता। लेकिन ये तो एक ही ट्रैक में चले गए हैं!

सफलता की चाबी

गूड मॉर्निंग अहमदाबाद। मैं हूँ RJ, अभय और आज हमारे साथ हैं, स्टेट लेवल रनिंग रेस (500 मीटर) में 3 बार गोल्ड मेडल जीतने वाले मिस्टर जय। आज हम उनसे उनकी नॉन स्टॉप सफलता का रहस्य जानेंगे। "तो प्लीज़ मिस्टर जय, हमारे युवा श्रोता मित्रों को आपकी सफलता की चाबी के बारे में बताइए।"

गूड मॉर्निंग युवा मित्रों! मैं हूँ जय और आज मुझे चान्स मिला है अपनी सफलता का राज़ बताने का। फ्रेंड्स, लाइफ इज़ अ ग्रेट लर्निंग!

आज मुझे युवा मित्र सुन रहे हैं इसलिए आज मैं खासतौर पर मेरे बचपन की बातों से शुरू करूँगा। मैं अपनी सारी सफलता का श्रेय अपने मम्मी-पापा को देना चाहूँगा। मेरे पापा एक रेसर थे और वे हमेशा से ही यही चाहते थे कि मैं उनसे भी ज्यादा अच्छा रेसर बनूँ। मैं छोटा था तब से मेरे पापा रोज़ सुबह मुझे ट्रेनिंग देते थे। मुझे रोज़ सुबह अपने पापा के साथ दौड़ना पड़ता था। तब मेरी उम्र के सभी बच्चे सुबह सात बजे उठते थे जबकि मुझे सुबह पाँच बजे उठना पड़ता था। मुझे अच्छा तो नहीं लगता था लेकिन पापा के कहने पर रोज़ ज़बरदस्ती उठना पड़ता था। एक बार मैंने मम्मी से कहा कि, "पापा क्यों मेरे पर इतना अत्याचार करते हैं? मेरे सारे मित्र देर से उठते हैं, जो खाना चाहें खाते हैं, जहाँ जाना चाहें जाते हैं लेकिन मुझे रोज़ सुबह जल्दी उठना पड़ता है, मनपसंद खा भी नहीं सकता, मेरे साथ ही ऐसा क्यों?"

तब मेरी मम्मी ने थोड़ा सोचकर कहा कि, "एक काम कर, तू भी अगर तेरे मित्रों की तरह जीना चाहता है तो तुझे तेरे पापा को एक बार रेस में हराना पड़ेगा। और अगर तूने हरा दिया तो मैं तेरे पापा से बात करूँगी।"

तब मैं समझ नहीं पाया कि मेरी मम्मी ने मुझे ऐसा क्यों कहा। लेकिन मैं तो अपने मित्रों की तरह करना चाहता था और फ्री बर्ड की तरह जीना चाहता था, इसलिए मैं रोज़ सुबह जल्दी उठने लगा और पापा को हराने के लिए बहुत मेहनत करने लगा। लेकिन

मुझे बहुत आश्चर्य हुआ क्योंकि हम दोनों की रेस थी पर फिर भी पापा की ट्रेनिंग में ज़रा सा भी फर्क नहीं आया था बल्कि जैसे-जैसे हमारी रेस का दिन करीब आ रहा था वैसे-वैसे वे मुझे और ज्यादा ट्रेन करने लगे थे। आखिर जब रेस का दिन आया तब मैं जीत गया और तब मुझसे भी ज्यादा खुश मेरे पापा हुए! मेरे मित्रों की तरह खाना-पीना करने के बजाय अब मुझे रेसिंग में आगे बढ़ने की तीव्र इच्छा हुई और मैंने पापा से कहा, "पापा, अब मैं रेसिंग में ही आगे बढ़ना चाहता हूँ। आप जैसा कहेंगे मैं वैसा ही करूँगा। रोज़ सुबह जल्दी उठूँगा, बाहर का खाना नहीं खाऊँगा लेकिन आप मुझे और ज्यादा ट्रेन कीजिए।"

बस, उसी दिन से मेरे पापा मुझे और भी ज्यादा ट्रेन करने लगें। पापा को देखने की मेरी दृष्टि ही बदल गई। पापा के डाँटने पर भी मुझे उनके पॉज़िटिव दिखाई देते थे। यों पापा के पॉज़िटिव देखते-देखते और मेहनत करते-करते मैं ओलम्पिक तक पहुँच गया!

फिर एक समय ऐसा भी आया कि मुझे लगने लगा कि अब मुझे कोई नहीं हरा सकता। और मेरे ऐसे विचार का असर मेरे वर्तन पर भी होने लगा। तब मेरे पापा ने मुझे टोका, "बेटा, आत्मविश्वास होना चाहिए लेकिन अपनी काबिलीयत का घमंड नहीं होना चाहिए। घमंड से इंसान को नीचे गिरने में देर नहीं लगती।" लेकिन कहते हैं न, इंसान अगर अहंकार करने लगे तो उसे कुछ भी दिखाई नहीं देता। जिन्होंने मुझे यहाँ तक पहुँचाया उनको ही मैंने कह दिया, "पापा, आप नहीं समझेंगे। मुझे लगता है कि आपको मेरे घमंड से नहीं बल्कि 'मुझसे अब कोई जीत नहीं पाएगा', इस बात से तकलीफ है।" बस तभी से मेरे पतन की शुरुआत हो गई। जिस गेम में मैं आराम से गोल्ड मेडल ला सकता था उस गेम में मेरा ४ था रेंक आया। उस दिन मुझे समझ में आ गया कि, "मैंने पापा के टोकने पर ध्यान नहीं दिया और जिनके द्वारा मैं आगे बढ़ा उनके ही मैंने नेगेटिव देखे, यह मेरी कितनी बड़ी गलती थी!"

मैं उदास होकर पापा के पास गया। मेरा ऐसा चेहरा देखकर पापा ने कहा, "अरे बेटा, कोई बात नहीं, नेक्स्ट टाइम और ज्यादा मेहनत करेंगे और गोल्ड मेडल ज़रूर जीतेंगे।" यह सुनकर मेरा दिल भर आया कि जिनके साथ मैंने बुरा बर्ताव किया, वे अभी भी मेरे हित के बारे में ही सोच रहे हैं।

उस दिन मेरी समझ में आया कि पेरेन्ट्स हमेशा हमारे हितेच्छु ही होते हैं। सच में, इस धरती पर मम्मी-पापा भगवान का स्वरूप हैं। और मैंने तय किया कि चाहे जो भी हो जाए लेकिन एक क्षण के लिए भी मम्मी-पापा के नेगेटिव कभी नहीं देखूँगा।

बस, उस दिन से लेकर आज तक मैंने हमेशा ही उनके पॉज़िटिव देखे हैं, उन्हें दु:ख हो जाए ऐसा कभी भी नहीं किया है और रिज़ल्ट आपके सामने है। यही है मेरी नॉन स्टॉप सफलता की चाबी।

'The key of success'

Q and A

प्रश्नकर्ता : मम्मी-पापा के पॉज़िटिव क्यों और कैसे देखें?

आप्तपुत्र : दादा ऐसा कहते हैं कि जब आपका मित्र आपकी मदद करता है तब आप उसे 'थैंक यू' कहते हैं लेकिन मम्मी-पापा तो आपके जन्म से पहले ही आपका ध्यान रखते हैं और आपको अच्छे संस्कार देते हैं फिर भी आप उन्हें 'थैंक यू' नहीं कहते। तो क्या उनकी कुछ गलतियाँ आप नज़र अंदाज़ नहीं कर सकते? हमारे मम्मी-पापा हमारे लिए जितना करते हैं उनमें से कई चीज़ों का तो हमें पता भी नहीं रहता।

प्रश्नकर्ता : कई बार मुझे उन पर गुस्सा भी आ जाता है, तो मैं क्या करूँ?

आप्तपुत्र : जब मम्मी आपको पसंद ना हो वैसा खाना देती हैं तब नेगेटिव दृष्टि के कारण आपको गुस्सा आता है कि वे हमेशा मुझे पसंद ना हो वैसा ही खाना बनाती हैं। लेकिन उस समय यदि आप पॉज़िटिव देखो कि इस खाने में से आवश्यक प्रोटीन और विटामिन्स मिलेंगे तो आपको अपने मम्मी-पाप पर गुस्सा नहीं आएगा। कभी-कभी पसंद का खाना

भी तो बनाती हैं न? यदि आप मम्मी-पापा को देखने की दृष्टि बदल दोगे और पॉज़िटिव देखोगे तो आपको उन पर गुस्सा नहीं आएगा।

क्या आपने कभी अपने मम्मी-पापा के साथ गुस्से से या दुत्कार कर बात की है या बुरा बर्ताव किया है?

प्रश्नकर्ता : हाँ, जब मूड खराब हो या उनके नेगेटिव दिखाई दें तब उन पर गुस्सा आता है।

आप्तपुत्र : यदि आपका मित्र आपके साथ दो-तीन बार दुत्कार कर बात करे तो क्या आप उसके साथ बात करना नहीं छोड़ देते हैं? आप अपने मम्मी-पापा के साथ ऐसे बातें करते हो फिर भी वे आपको छोड़े नहीं हैं। ऐसा होता तो क्या आपका जन्म होते ही आपको अनाथ आश्रम में छोड़कर नहीं आते? लेकिन नहीं, मम्मी-पापा ऐसा नहीं करते हैं। वे लोग हमारे लिए जितना करते हैं न, उतना हम तो कर ही नहीं सकते, समझ में आया?

प्रश्नकर्ता : हमें उनके उपकार के लिए कैसे आभार व्यक्त करना चाहिए?

आप्तपुत्र : सच कहा जाए तो उनके उपकार के सामने 'थैंक यू' तो कुछ भी नहीं है। आप यदि सच में उनका आभार मानना चाहते हो तो आपको उनके प्रति नेगेटिव विचार, गुस्सा, अविनय और दुत्कार भरे वाणी-वर्तन छोड़कर उनके साथ प्यार से रहना चाहिए।

एक्टिविटी

दादा भगवान फाउन्डेशन, **GNC** द्वारा आयोजित यूवा शिविर के एक सेशन की एक्टिविटी में मम्मी-पापा द्वारा किए गए उपकारों को एक लेटर में लिखकर मम्मी-पापा को देना था। इस एक्टिविटी से मम्मी-पापा और युवाओं के बीच प्यार और अपनापन बढ़ा। भूतकाल में हुए तकरार और मतभेद दूर हो गए। एक्टिविटी से कई युवाओं को फायदा हुआ, उनमें से एक का अनुभव हम आगे पढ़ेंगें।

इस बार हम आपके लिए एक बहुत अच्छी एक्टिविटी लेकर आए हैं। एक पेपर और पेन लेकर आपके मम्मी-पापा द्वारा किए गए उपकारों को लिखना है। लिखने के बाद आपके मम्मी-पापा को वह लेटर पढ़कर सुनाना है। यदि मम्मी-पापा साथ में नहीं रहते हों तो उन्हें कॉल करके यह लेटर पढ़कर सुनाना है।

इस एक्टिविटी को आसान बनाने के लिए आपके लिए हमने एक सेम्पल लेटर और मम्मी-पापा को लेटर सुनाने के बाद क्या अनुभव होता है उसका एक उदाहरण भी दिया है।

तो सभी युवा यह एक्टिविटी करने के लिए रेडी हैं न...?

माता-पिता के लिए पत्र

आज तक आपने मेरे लिए बहुत कुछ किया है। मेरे जन्म के पहले नौ महीनों के दौरान मम्मी ने बहुत सावधानियाँ रखीं। मुझे बिल्कुल भी तकलीफ न हो और बहुत अच्छी तरह से मेरा संपूर्ण विकास हो पाए इसके लिए निरंतर ध्यान रखा। मम्मी, आपका बहुत-बहुत आभार। आपके इस प्रेम और उपकार का बदला मैं ज़िंदगी भर नहीं चूका पाऊँगा।

पापा ने भी मेरे लिए बहुत कुछ किया है। जब मैं छोटा था तब पैसों की तंगी थी फिर भी आपने मेरी सुख-सुविधाओं या पालन-पोषण में कोई कमी नहीं आने दी। जब मैं छोटा था तब आप हमेशा मझे घुमाने ले जाते थे। मेरी पसंद का खिलौना चाहे जितना भी महँगा हो फिर भी आपने कभी भी लेने से मना नहीं किया। मुझे याद है कि जब मैं छोटा था तब मुझे साइकिल का बहुत शौक था। नई साइकिल लेने के हमारे हालात नहीं थे फिर भी आपने खर्च की प्लानिंग करके मुझे मेरी पसंद की साइकिल ला दी थी। आज तक मैंने जो भी माँगा है वह आपने याद रखकर पैसों की व्यवस्था होते ही तुरंत ला दिया है। मम्मी हर बार यही कहती कि आप बच्चों को बिगाड़ रहे हो, ऐसा करते हो, वैसा करते हो, फिर भी आपने कभी भी मुझे नाराज़ नहीं किया।

मेरी माँगी हुई चीज़ ना मिलने पर कभी-कभी मैंने उल्टा-सीधा भी कह दिया होगा लेकिन आपके प्रेम में कभी भी कमी नहीं आई। ज़रूरत पड़ने पर भले ही आपने मुझे डाँटा है, लेकिन मुझे दुःख हो ऐसा आपने कभी भी नहीं किया... आप बहुत ही केयरिंग पापा हैं, बहुत-बहुत आभार।

मम्मी, जब मैं 10-12 साल का था तब बात-बात में रोने लगता था, सब लोग मुझे चिढ़ाते थे फिर भी आपने हमेशा मेरी साइड ली है। घर खर्च में से पैसे बचाकर आप मेरी पसंद का खाना बनाती थी। मैं आपको उल्टा-सीधा बोल देता था, पलटकर जवाब भी देता था, एक बार तो मैंने आपको ऐसा भी कह दिया था कि आपको नर्क में भी जगह नहीं मिलेगी, ऐसा सब मिसबिहेव करने के लिए दिल से 'सॉरी' मम्मी, माफी चाहता हूँ। मुझे इस बात का ज़िंदगी भर दुःख रहेगा कि आपने मेरे लिए बहुत कुछ किया है फिर भी मैंने आपको उल्टा-सीधा बोला था। हो सके तो मुझे माफ कर देना।

आप लोगों की अपेक्षा पर खरा उतर सकूँ ऐसा कोई भी काम मैंने आज तक नहीं किया, फिर भी आप दोनों का प्रेम कभी भी कम नहीं हुआ। दिल से 'थैंक यू' और आप जैसा चाहते हैं वैसा बनने की अब मैं पूरी कोशिश करूँगा।

- दर्शित वैष्णव

अनुभव

बहुत ही अच्छा अनुभव रहा। पहले मैं ऐसा मानता था कि मम्मी-पापा जो करते हैं वह उनका फर्ज़ है और वह सब करना ही चाहिए। मम्मी-पापा को लेटर लिखने के बाद पता चला कि जिसे मैं फर्ज़ समझता था वह तो वास्तव में बच्चों पर उनका उपकार है। घर पहुँचने के बाद मुझमें बहुत चेन्ज आ गया। पापा ऑफिस जाने के लिए घर से निकलें तब 'बाय-बाय' कहना, घर लौटने पर, 'कैसा रहा दिन?' पूछना। अब मैं उनके साथ इन्फॉर्मल बातें ज्यादा करने लगा, जो मैं पहले नहीं करता था।

मम्मी जो भी काम कहे वह तुरंत कर देना, मेरी सारी बातें और भी बहुत कुछ मम्मी-पापा के साथ शेयर करना। 'कैसा रहा दिन? दिनभर क्या-क्या किया?' ये सब बातें करना। घर का वातावरण भी एक-दूसरे के प्रति केयरिंग वाला लगने लगा। ओवरऑल बहुत ही लाइफ चेन्जिंग अनुभव रहा।

- मेहूल गोहिल

एक बार मुझे अनाथाश्रम जाने का मौका मिला। वहाँ ऐसे बच्चों से मिला जिन्हें जीवन में बहुत संघर्ष करना पड़ता है। उनके मम्मी-पापा नहीं हैं इसलिए उन्हें वहीं रहना पड़ता है। उन बच्चों का दुःख और परवशता देखकर मैं खुद को बहुत लकी मानने लगा। मैं तो अपनी पसंद की चीज़ें, घूमना-फिरना सब ज़िद करके पा ही लेता हूँ, पर ये बच्चे क्या करते होंगे? उन्हें कौन प्यार करता होगा? क्या उन्हें पसंद का खाना मिलता होगा? मम्मी-पापा के प्यार के बिना कैसे जीते होंगे? मन में अनेक सवाल उठें...

मेरे मम्मी-पापा की छाया में "मैं दुनिया का सब से अमीर बालक हूँ" ऐसा महसूस होने लगा।

- ख्याती गोन्डलीया

जोक्स

पिता : इस परीक्षा में तुम्हारे इतने कम मार्क्स क्यों आए?
पुत्र : अनुपस्थिति के कारण।
पिता : तुम परीक्षा में अनुपस्थित थे?
पुत्र : नहीं, लेकिन परीक्षा में मेरे साथ जो लड़का बैठता है वह अनुपस्थित था।

मम्मी अपने बच्चों से : जो मेरी सभी बात मानेगा और पलटकर एक भी जवाब नहीं देगा उसे मैं गिफ्ट दूँगी।
बच्चें : लो, कर लो बात! इस तरह तो सारे गिफ्ट पापा ही ले जाएँगे।

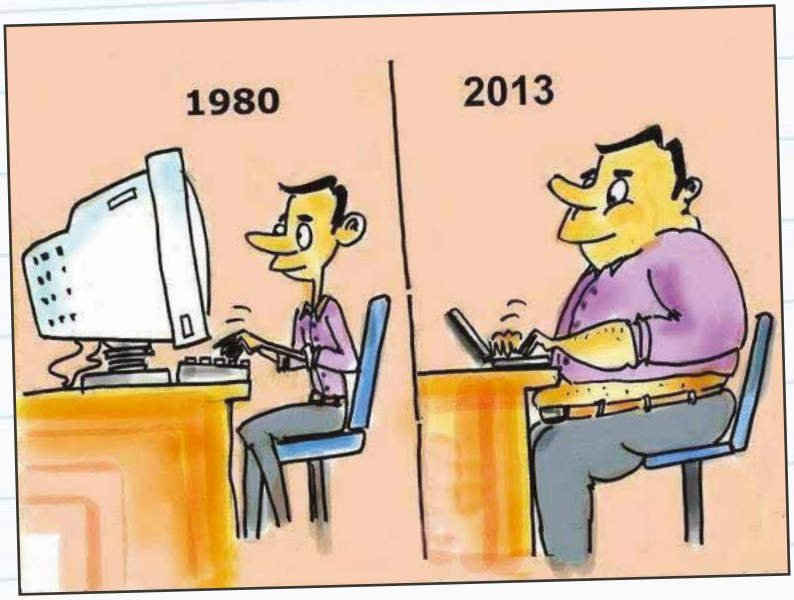

Free Download

Akram Youth Magazine

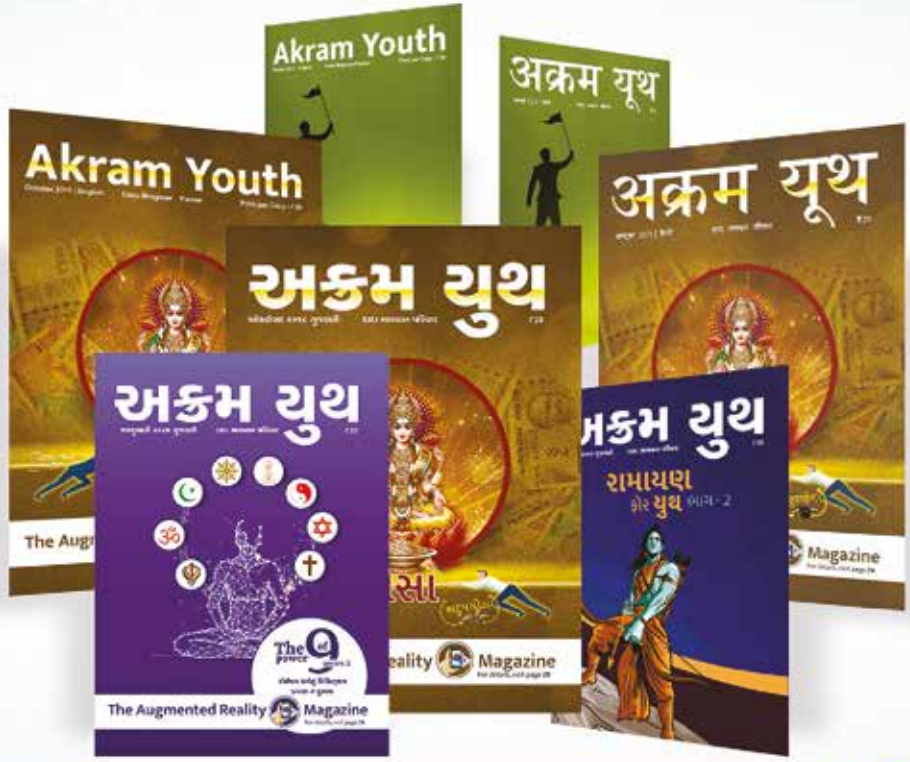

ગુજરાતી , हिंदी, English

youth.dadabhagwan.org

#कविता

थोड़े पुराने, कभी गरम कभी शीतल धारा...
फिर भी बच्चों के प्रति हमेशा प्रेम बहुत न्यारा...

हूँफ से सींचा-सँभाला, जैसे कोई कोमल फूल...
मतभेद हो तो स्वीकार लो, है अपनी ही कोई भूल...

शैतानियाँ तुम्हारी हँसकर जाने दी जिन्होंने मज़ाक में...
तुम भी हँसकर जाने देना, हो भूल उनकी किसी बात में...

आभारी उनकी हैं आशाएँ और जितने प्रभात हैं...
प्रतिकुल परिस्थिति में गिनना उनके कितने उपकार हैं...

संसार में सुखी होने का उपाय हमारे दादाजी बताते हैं...
माँ-बाप की सेवा जिस घर में, सुख वहाँ दौड़े चले आते हैं...

दादा के युवाओं द्वारा

जुलाई 2021
वर्ष : 9, अंक : 3
अखंड क्रमांक : 99

Send your suggestions and feedback at: akramyouth@dadabhagwan.org
Printed and Published by Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation-Owner.
Printed at : Amba Offset, B-99, GIDC, Sector-25, Gandhinagar – 382025.